आइए इन पदों के साथ समाप्त करें:

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र [यीशु मसीह] दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए। जो उस पर [यीशु मसीह पर] विश्वास करता है, उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती, परन्तु जो उस पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी ठहर चुका; इसलिये कि उसने परमेश्वर के एकलौते पुत्र के नाम पर विश्वास नहीं किया।"[4]

"...मनुष्य का पुत्र [यीशु मसीह] इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती [कीमत देकर खरीदने] के लिये अपने [यीशु मसीह के] प्राण दे।"[5]

"परन्तु जितनों ने उसे [यीशु मसीह को] ग्रहण किया, उसने [परमेश्वर ने] उन्हें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात् उन्हें जो उसके [यीशु मसीह के] नाम पर विश्वास रखते हैं।"[6]

ये पद परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह के बारे में क्या कहते हैं?

ये पद हमसे कहते हैं कि

- परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र (यीशु मसीह) दे दिया
- यदि हम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास करें तो हम नष्ट नहीं होंगे (परमेश्वर के क्रोध से बचाए जाएँगे), परन्तु अनन्त जीवन पाएँगे।
- परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को जगत में इसलिये नहीं भेजा कि जगत पर दण्ड की आज्ञा दे, परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए।
- यदि हम उस पर विश्वास करते हैं, तो हम दोषी नहीं ठहरेंगे
- मसीह ने बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे दिए अर्थात मसीह ने हमें कीमत देकर खरीद लिया।
- आखिर में, हमें यीशु मसीह को ग्रहण करना और उसके नाम पर विश्वास रखना है, ताकि हम परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार प्राप्त कर सकें

1. रोमियों 5:6-10
2. रोमियों 3:23
3. 1 कुरिन्थियों 15:1-4
4. यूहन्ना 3:16-18
5. मत्ती 20:28
6. यूहन्ना 1:12

(केवल निजी वितरण के लिए)

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:
whoisjesus008@gmail.com

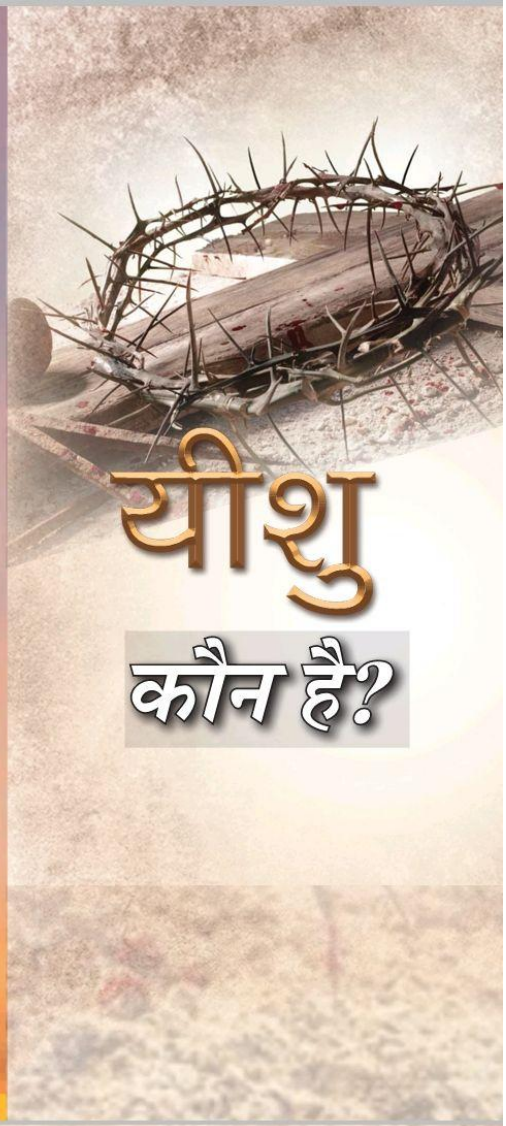

यीशु कौन है?

यीशु कौन है?

कुछ लोग कहते हैं कि यीशु मसीह एक अच्छा उपदेशक था, एक अच्छा इंसान था, एक शक्तिशाली नबी था; जबकि अन्य लोग कहते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र था अर्थात देहधारी होकर आया परमेश्वर था।

आप क्या सोचते हैं?

यीशु के जीवन का उद्देश्य क्या था?

यह जानना हमारे जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण क्यों है?

इन प्रश्नों के उत्तर देने के लिए हमें बाइबल के कुछ वचनों को देखना होगा ताकि हम पता लगा सकें कि इस बारे में बाइबल क्या कहती है। आइए पढ़ना आरम्भ करें:

"क्योंकि जब हम निर्बल ही थे, तो मसीह ठीक समय पर भक्तिहीनों के लिये मरा। किसी धर्मी जन के लिये कोई मरे, यह तो दुर्लभ है; परन्तु हो सकता है किसी भले मनुष्य के लिये कोई मरने का भी साहस करे। परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा। अतः जब कि हम अब उसके लहू के कारण धर्मी ठहरे, तो उसके द्वारा परमेश्वर के क्रोध से क्यों न बचेंगे? क्योंकि बैरी होने की दशा में उसके पुत्र की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ, तो फिर मेल हो जाने पर उसके जीवन के कारण हम उद्धार क्यों न पाएँगे?"[1]

"...सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं [परमेश्वर की महिमा के स्तर से बहुत नीचे हैं]।"[2]

इन पदों में मनुष्यों के बारे में कुछ तथ्य दिए गए हैं। ये पद बताते हैं कि सब मनुष्य ऐसे हैं:

- निर्बल
- भक्तिहीन
- पापी, जो परमेश्वर की महिमा से रहित हैं
- परमेश्वर के बैरी (अपने पापी स्वभाव के कारण)
- यदि हम परमेश्वर के पुत्र पर विश्वास नहीं करेंगे, तो हम परमेश्वर के क्रोध का सामना करेंगे

ये पद यह भी बताते हैं कि

- मसीह भक्तिहीनों के लिए (हम सब के लिए) मरा
- परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा
- हम मसीह के लहू के कारण धर्मी ठहरे हैं (धर्मी और पूरी तरह से पवित्र किए गए हैं)
- हम मसीह के द्वारा परमेश्वर के क्रोध से बचेंगे
- मसीह की मृत्यु के द्वारा हमारा मेल परमेश्वर के साथ हुआ है (हमने परमेश्वर की कृपादृष्टि पा ली है)
- मसीह के जीवन के कारण हम उद्धार पाएँगे

और अधिक स्पष्टता के लिए आइए आगे पढ़ें:

"हे भाइयो, अब मैं तुम्हें वही सुसमाचार [शुभ सन्देश] बताता हूँ जो पहले सुना चुका हूँ, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैं ने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैं ने सबसे पहले तुम्हें वही बात पहुँचा दी, जो मुझे पहुँची थी कि पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया, और गाड़ा गया, और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।"[3]

सुसमाचार का अर्थ शुभ सन्देश है। ऊपर दिए गए पदों के अनुसार शुभ सन्देश क्या है?

- पवित्रशास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिये मर गया
- मसीह को गाड़ा गया (दफनाया गया)
- पवित्रशास्त्र के अनुसार मसीह तीसरे दिन जी भी उठा (मृतकों में से जीवित हो गया)

इनमें यह भी लिखा है कि

- हम इस शुभ सन्देश का अंगीकार करें और इस पर विश्वास करें
- हम इस शुभ सन्देश में स्थिर रहें और इसे स्मरण रखें
- उसी शुभ सन्देश के द्वारा हमारा उद्धार भी होता है